(बालस्मृति)

—----------

ओ चटकन

****

– भीमनाथ झा

“‘,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,”

हमर आरम्भिक शिक्षा कने दोसर तरहेँ भेल। नेनामे हम नेना सङे नहि पढ़लौँ। पाँचम बरखमे मूड़न सङे खड़ी भेल। बाबूजी अपना सङे काशी ल’ गेला। ओ श्यामा मन्दिरमे रहथिन। ओत’ ने एकोटा नेना, ने नेनाक माइए। सभ चेतने-चेतन। ताहि बीच हमही एकटा नेना। ओही वातावरणमे अक्षर-परिचयसँ ल’क’ विषय-प्रवेश धरि भेल।

दोसर चरणमे अङरेजी आ हिसाबपर बेसी जोर देल गेल। ट्यूशन तँ नहि कहब, जे केओ पढ़ब’ आबथि, वैह दुनू विषय टा पढ़ाबथि। पाँच-छौ वर्ष यैह क्रम चलल, खाली ओही दू विषयपर जोर। मुदा, फल तकर ई भेल जे वैह दुनू विषय परम कमजोर रहल।

जखन छेटगर भेलौँ तँ हरिश्चन्द्र कालेजिएट स्कूलमे नाम लिखाओल गेल। ओत’ पढ़’ लगलौँ। एक दिन गणितक क्लासमे मास्टर साहेब अबिते ब्लैकबोर्डपर खड़ीसँ डबल गोलाकार डाँइर घीचि देलथिन आ पुछलथिन– यह क्या है? जो जानते हो, वह हाथ उठाओ। करीब आधा विद्यार्थीक हाथ उठि गेलै। हम पछिला बेंचपर बैसल रही। हाथ नहि उठौलिऐ। मास्टर साहेब सौँसे नजरि खिराक’ हमरा दिस आङुर उठाक’ बजला– तुम खड़ा हो। बोलो, यह क्या है? हम ठाढ़ भ’ गेलौँ आ गुम्मे रहलौँ। ओ जोर-जोरसँ पुछैत रहला आ हमरा दिस बरहैत रहला। लगपासक कैकटा विद्यार्थी कहलक जे बोलो न, वृत्त है। तैयो हम गुम भेल ठाढ़। वृत्त सुनियोक’ एहि दुआरे नहि बाजी जे पुछता “यह क्या होता है” तँ की जवाब देबनि? मास्टर साहेब लग आबि एक चटकन गालपर दैत कहलनि–”बोलना नहीं आता है क्या?” झन्न द’ उठल आ कान सुन्न भ’ गेल। गह्वरित भ’ गेलौँ। तैयो स्कूल तँ जाइए पड़ैत रहय।

दुर्भाग्य एहन भेल जे किछुए दिनक बाद बाबूजीक ओत्तहि देहान्त भ’ गेलनि आ हमरा काशी छुटि गेल। एम्हर, बिहारमे मैट्रिक क्लासमे किछुए साल पहिने गणितकेँ अनिवार्य विषयसँ हटाक’ ऐच्छिक विषयमे राखि देल गेल छलै। जँ से नहि भेल रहितै तँ मैट्रिक पास करब हमर सपने रहि जाइत।

पढ़बामे मारि हम एक्के बेर खयने छी। अहाँ लोकनि गणितमे सयमे सय अंक आनि सभ क्लासमे मधुर खाइत रही,से इच्छा रखैत छी, तकर शुभकामना दैत छी।

(18. 6. 2025)

—----------